Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ५५१० - घ

Title हनुमच्चालीसा

Author +

Extent ५ Age +

Subject संपूर्णम्

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

5510

F.S

हनुमानचाली

नं० १०१९

142

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

~~नं० ५६~~

नं० ५५१० – च

हनुमच्चालीसा

पत्राणि ५ (पञ्च)

(संपूर्णम्)

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीरामाय नमः ॐ
जय हनुमन ज्ञान गुण सागर ॥ जय कपी-
श तिहुं लोक उजागर ॥ रामदूत अतुलित
बलधामा ॥ अंजनीपुत्र पवनसुत नामा
महाबली विक्रम बजरंगी ॥ कुमति
निवारँ सुमति के संगी ॥ कंचन बरन ॥॥
न

नं १०१९-क
हनुमानचालीसा
पूर्ण

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह
१

विराजसदेसा॥कुंडलकानकंगहैकेसा
हस्तिवज्रअरुधजाविराजै॥कांधेमूंज॥
जनेऊसाजे॥शंकरशक्तिकेसरीनंदन
तेजप्रतापमहाजगवंधन॥विद्यावेन॥
निपुठअतिचातुर॥भक्तिकारजकरबे
कऊआतुर॥रामचरित्रसुनवेकऊरसी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

या॥रामलछमनसीतामनबसीयास्त
त्मवधुरसीयादिछरायो॥बजेत्रूपपर
लेकरायो॥भीमत्रूपह्नोइश्रह्मरासि
ग्यारे॥श्रीरामचंद्रकेकाराजसंभारे॥रघु
पतिकीनबड्डबडियाई॥भरतहिदिबले
प्यारोभाई॥सहहलनामत्रगणतमराग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह २४७

यो॥ श्रीरघुनेमचरणमबनायो॥ तुमउप
कारसुग्रीकाकीना॥ रामसिलायराज
तुमदीना॥ तुमरामंत्रविभीषनमाना॥
ऋवालेकपतिमभजराजाना॥ लत्वश॥
माणायोजननजोमाना॥ जन्मतहीसब
जगजाना॥ कृदयसोमनधमेलोना॥ ॥

हि॥जननिनामसकिकुश्रवरनाही॥उरज
नकाजसगलकेजीते॥हगामसञुग्रह
नमरेनेने॥रामसह्वारानमरषवाराविन
श्रज्ञानेहोयसहिश्रारा॥नमरामभगतरा
मकोपावै॥जन्मजन्मकेदुःषविसाँरा
वै॥समसहावसहैनमारीसरना॥न

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह
१
3

मरक्षककाहूनेडरना ॥ दैत्यभूतकिछुनि
कटनआवै ॥ महावीरजबनामसुनावै
नासैरोगहरैसबपीरा ॥ जपैनिरंतरहनु
मतबीरा ॥ संकटतेहनुमंतछुडावै ॥ म
नवचकर्मजबीकोध्यावै ॥ होरमनोरथ
जोकोध्यावै ॥ अनेकहृषिवितवतफल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पावै॥ पैंडजगमै अनाथनमारा होप्रसि
द्धजगउजआरा॥ अधिकवेनतीकरोन
मपाहौ॥ होरवसीलाराघननाहौ॥ सर
नपरोदयाकरहहो॥ महावीरमैतेरोचो
रो॥ पडैभजरंगचालीसैकामविसवेबी
स॥ रोनामोगकायादहै॥ भयसमगारनेनि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हू ५

रमैरहै ॥ जोदिनप्रतिरहमैंत्रउवरहीमं
गलदिनहूनएजनकरई ॥ आदित्य ।
वारआदित्यकीअरचा ॥ धूपदीपवंदन
मेंथवारचा ॥ मिष्टअग्रधररहध्यावै ॥ भक्ति
प्रभावहूनिश्चैपावै ॥ दिनवालीनितने
मनिवाहै ॥ एकशतआठवेरअबगाहै ॥ ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पवसहस्त्रपंचसउविप्रजै ॥ नरपनहवन ॥
होरकरलीजै ॥ पुनपीछेइहमेंत्रजोय।
दे ॥ जोजाहैसोमबल्यारढै ॥ सोसमत ॥
त्यन्नुमनमेंधराई ॥ उकनासत्नाऊकमसव
कराई ॥ इसहिमंत्रपठरोगनिवारै ॥ छाया।
हृष्टिकाष्टिसचारौ ॥ कबडूननाकोदरि ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नं० २३४

ह
य

इपरई॥ मंत्रयेत्रअरजोहनुजरई॥ परम
प्रभाववंतनरसोई॥ जाकेरघुपवनमुन
नहोई॥ इति श्रीहनुमानचालीसासमाप्तम

८८
१०१९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri